International Scholars Journals

Global Journal of Sociology and Anthropology ISSN 2756-3456 Vol. 12 (1), pp. 001-012, September , 2023.
Available online at www.internationalscholarsjournals.org © International Scholars Journals

Author(s) retain the copyright of this

मधुबनी ज़िले में राजनीतिक जागरूकता, चुनावी सहभागिता और लोकतांत्रिक संलग्नता का मूल्यांकन

बिंदेया कुमारी[1], डॉ. नीतू कुमारी[2]

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, वाईबीएन विश्वविद्यालय[1]

अनुसंधान पर्यवेक्षक, राजनीति विज्ञान विभाग, वाईबीएन विश्वविद्यालय[2]

Accepted 27 August, 2023

सार

मधुबनी ज़िला, बिहार के मिथिलांचल में स्थित एक ग्रामीण-बहुल जनपद है जहाँ 2011 जनगणना के अनुसार 44,87,379 की जनसंख्या निवास करती है। इस शोध का उद्देश्य मधुबनी में राजनीतिक जागरूकता के स्तर, चुनावी सहभागिता की प्रवृत्तियों और लोकतांत्रिक संलग्नता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन करना है। अध्ययन 2009 से 2023 की अवधि के निर्वाचन आयोग के द्वितीयक आँकड़ों, जनगणना 2011 तथा Lokniti-CSDS सर्वेक्षण रिपोर्टों पर आधारित है। परिकल्पना यह है कि साक्षरता दर, जाति-आधारित एकजुटता एवं महिला सशक्तिकरण नीतियाँ मतदान प्रतिशत को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। परिणाम दर्शाते हैं कि 2019 लोकसभा चुनाव में मधुबनी में 53.7% और 2020 विधानसभा चुनाव में 54.13% मतदान रहा, जो बिहार के राज्य औसत 57.05% से कुछ कम है। महिला मतदाताओं की भागीदारी में धीरे-धीरे सुधार हुआ है, परंतु 46.16% की निम्न महिला साक्षरता दर राजनीतिक जागरूकता में एक प्रमुख बाधा बनी हुई है। निष्कर्षतः, मधुबनी में लोकतांत्रिक संलग्नता मध्यम स्तर की है और लक्षित साक्षरता तथा जागरूकता कार्यक्रमों से इसे और प्रभावी बनाया जा सकता है।

कीवर्ड: राजनीतिक जागरूकता, चुनावी सहभागिता, मतदान प्रतिशत, लोकतांत्रिक संलग्नता, मधुबनी ज़िला

1. प्रस्तावना

भारतीय लोकतंत्र में चुनावी भागीदारी को नागरिक सहभागिता का सर्वाधिक मूर्त एवं मापनीय संकेतक माना जाता है। 1990 के दशक में हुए "द्वितीय लोकतांत्रिक उभार" ने निम्न जातियों एवं आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों की राजनीतिक भागीदारी में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया। बिहार, जो ऐतिहासिक रूप से जाति-केंद्रित राजनीति का केंद्र रहा है, में यह उभार विशेष रूप से प्रखर रूप में दृष्टिगोचर हुआ। मधुबनी ज़िला, इसी राज्य का एक संवेदनशील एवं सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से विशिष्ट क्षेत्र है। 2011 जनगणना के अनुसार मधुबनी ज़िले की जनसंख्या 44,87,379 है, जिसमें 96.4% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है (Census of India, 2011)। ज़िले की कुल साक्षरता दर 58.62% है जो बिहार राज्य के औसत 61.8% से भी कम है; पुरुष साक्षरता 70.14% एवं महिला साक्षरता मात्र 46.16% है। यह व्यापक लैंगिक असमानता राजनीतिक जागरूकता की दृष्टि से एक गंभीर चुनौती प्रस्तुत करती है। शोध-साहित्य में साक्षरता एवं चुनावी भागीदारी के बीच सकारात्मक सहसंबंध को बार-बार प्रतिपादित किया गया है (Biswas, 2022)।

मधुबनी लोकसभा क्षेत्र (क्रमांक 6) में 2009 के चुनाव के समय कुल 13,97,256 पंजीकृत मतदाता थे, जिनमें 7,55,812 पुरुष एवं 6,41,444 महिलाएँ सम्मिलित थीं (Election Commission of India, 2019)। 2019 लोकसभा चुनाव में मधुबनी विधानसभा क्षेत्र में 53.7% मतदान हुआ, जबकि 2020 विधानसभा चुनाव में यह बढ़कर 54.13% हो गया (Election Commission of India, 2020)। बिहार में 2020 में महिला मतदान दर 59.58% रही जो पुरुषों की 54.68% से अधिक थी यह मधुबनी जैसे ग्रामीण ज़िलों में महिला राजनीतिक भागीदारी की बदलती तस्वीर का संकेत है। मधुबनी में 84.07% जनसंख्या मैथिली भाषी, 81.39% हिंदू एवं 18.25% मुस्लिम है (Census of India, 2011)। ज़िले की प्रति व्यक्ति आय मात्र ₹32,368 (2021-22) है और यह पिछड़ा क्षेत्र अनुदान निधि (BRGF) के अंतर्गत आता है। आर्थिक पिछड़ेपन के बावजूद राजनीतिक सहभागिता का अध्ययन यह दर्शाता है कि ग्रामीण निर्धन मतदाता प्रायः सक्रिय होते हैं (Panda, 2019)। यह शोध-पत्र इन्हीं जटिल संबंधों का विश्लेषण करता है और ज़िले में लोकतांत्रिक संलग्नता की वास्तविक स्थिति को उजागर करता है।

2. साहित्य समीक्षा

Yadav और Palshikar (2009) ने अपने विस्तृत विश्लेषण में पाया कि बिहार में जाति-आधारित एकजुटता एवं क्षेत्रीय पहचान मतदान व्यवहार को सर्वाधिक निर्धारित करती है। मंडल-पश्चात बिहार

में पिछड़े एवं अति-पिछड़े वर्गों की चुनावी भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई जो मधुबनी जैसे ज़िलों में भी परिलक्षित होती है। यह बदलाव लोकतंत्र के विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया को मज़बूत करता है। Biswas (2022) के बिहार विधानसभा चुनाव (2010-2020) के स्थानिक विश्लेषण ने स्पष्ट किया कि मिथिलांचल क्षेत्र में मतदाता व्यवहार पर जाति, धर्म एवं जनसांख्यिकीय संरचना का प्रबल प्रभाव है। मधुबनी एवं दरभंगा जैसे ज़िलों में मतदान प्रतिशत की स्थानिक भिन्नता दर्ज की गई जो असमान विकास एवं सामाजिक संरचना को दर्शाती है। शोधकर्ता ने पाया कि महिला मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी बिहार की नई राजनीतिक वास्तविकता है।

Rai (2017) के शोध में भारत में महिला चुनावी सहभागिता की "मूक नारीकरण" प्रक्रिया का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण महिलाएँ मतदान में तो आगे आ रही हैं परंतु निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में उनकी प्रभावी भूमिका अभी सीमित है। यह निष्कर्ष मधुबनी ज़िले के संदर्भ में सीधे लागू होता है जहाँ महिला साक्षरता और राजनीतिक एजेंसी के बीच गहरी खाई है। Nooruddin और Simmons (2015) के अनुसार जहाँ मतदान अधिक होता है वहाँ सरकारी कल्याण योजनाओं का क्रियान्वयन भी प्रभावी होता है, क्योंकि जन-जवाबदेही बढ़ती है। यह परिप्रेक्ष्य मधुबनी में अत्यंत प्रासंगिक है जहाँ BRGF, MGNREGS एवं प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी योजनाएँ लागू हैं। Diwakar (2008) ने भी पाया कि BPL परिवारों का मतदान प्रतिशत उच्च आय वर्गों से अधिक होता है। Palshikar (2015) ने विश्लेषण किया कि राष्ट्रीय राजनीतिक दलों की उपस्थिति एवं स्थानीय जाति-पहचान के मध्य तनाव बिहार जैसे क्षेत्रों में चुनावी संलग्नता को अपना विशिष्ट स्वरूप देता है। Kumar और Banerjee (2017) ने पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों में मेट्रो शहरों की तुलना में मतदान प्रतिशत अधिक होता है। मधुबनी, जहाँ 96.4% जनसंख्या ग्रामीण है, यह प्रवृत्ति प्रासंगिक है। Alam (2009) ने मंडल-पश्चात बिहार में मतदाता जागरूकता एवं राजनीतिक चेतना में आए परिवर्तन का सूक्ष्म विश्लेषण किया, जिससे ज़िला स्तर पर नई राजनीतिक धाराओं को समझने में सहायता मिलती है।

3. उद्देश्य (Objectives)

1. मधुबनी ज़िले में 2009 से 2020 के मध्य चुनावी सहभागिता की प्रवृत्तियों एवं लिंग-आधारित भिन्नता का विश्लेषण करना।
2. ज़िले में साक्षरता, जाति संरचना एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति का राजनीतिक जागरूकता और लोकतांत्रिक संलग्नता पर प्रभाव को मापना।

4. शोध-पद्धति

यह अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक अभिकल्प पर आधारित है। तुलनात्मक-ऐतिहासिक विधि के माध्यम से 2009 से 2023 की अवधि को समाहित किया गया है। मधुबनी लोकसभा क्षेत्र (क्रमांक 6) एवं मधुबनी विधानसभा क्षेत्र (क्रमांक 36) को अध्ययन इकाई के रूप में चयनित किया गया है जो पूरे ज़िले का प्रतिनिधित्व करता है। डेटा संग्रह हेतु भारत निर्वाचन आयोग (ECI) की सांख्यिकीय रिपोर्टें (2009–2020), जनगणना 2011 के ज़िला आँकड़े (District Census Handbook, Madhubani), Lokniti-CSDS के मतदान पश्चात् सर्वेक्षण (2020), बिहार सरकार की सांख्यिकीय पुस्तिका एवं NITI Aayog SDG सूचकांक का उपयोग किया गया। तकनीक के रूप में प्रतिशत वितरण विश्लेषण, लिंग-वार तुलनात्मक सारणी और वर्ष-दर-वर्ष प्रवृत्ति विश्लेषण को अपनाया गया। चुनावी डेटा को जनसांख्यिकीय संकेतकों के साथ सहसंबंधात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। जनगणना 2021 की अनुपलब्धता एवं प्राथमिक सर्वेक्षण का अभाव इस अध्ययन की मुख्य सीमाएँ हैं।

5. परिणाम

तालिका 1: मधुबनी ज़िले की जनसांख्यिकीय एवं सामाजिक-आर्थिक प्रोफ़ाइल (जनगणना 2011)

संकेतक	मान
कुल जनसंख्या	44,87,379
पुरुष जनसंख्या	23,29,313
महिला जनसंख्या	21,58,066
लिंगानुपात (प्रति 1000 पुरुष)	926
कुल साक्षरता दर	58.62%
पुरुष साक्षरता दर	70.14%
महिला साक्षरता दर	46.16%
ग्रामीण जनसंख्या	96.4%
नगरीय जनसंख्या	3.6%
SC जनसंख्या	13.16%

मुख्य भाषा (मैथिली)	84.07%
प्रति व्यक्ति आय (₹, 2021-22)	32,368

स्रोत: Census of India (2011); Indiastatpublications.com

तालिका 1 से स्पष्ट है कि मधुबनी ज़िले में 96.4% ग्रामीण जनसंख्या एवं 58.62% निम्न साक्षरता दर राजनीतिक जागरूकता के लिए एक जटिल वातावरण निर्मित करती है (Census of India, 2011)। पुरुष-महिला साक्षरता के बीच 24 प्रतिशत-अंक का अंतर एवं 926 का लिंगानुपात महिला राजनीतिक भागीदारी की सीमाओं को रेखांकित करता है। ₹32,368 प्रति व्यक्ति आय यह दर्शाती है कि आर्थिक पिछड़ापन यहाँ के लोकतांत्रिक परिवेश को प्रत्यक्षतः प्रभावित करता है।

तालिका 2: मधुबनी लोकसभा क्षेत्र में मतदाता पंजीकरण एवं मतदान डेटा (2009–2019)

चुनाव वर्ष	कुल पंजीकृत मतदाता	पुरुष मतदाता	महिला मतदाता	मतदान प्रतिशत
2009	13,97,256	7,55,812	6,41,444	52.3%
2014	15,68,000*	8,34,000*	7,34,000*	58.2%*
2019	~18,20,000	~9,60,000	~8,60,000	53.7%

*स्रोत: Election Commission of India (2010, 2014, 2019); elections.in (*अनुमानित आँकड़े ECI रिपोर्ट के आधार पर)*

तालिका 2 दर्शाती है कि मधुबनी लोकसभा क्षेत्र में 2009 से 2019 के मध्य मतदाता संख्या में लगभग 30% की वृद्धि हुई (Election Commission of India, 2019)। 2009 में कुल 13,97,256 पंजीकृत मतदाताओं में महिलाएँ (6,41,444) कुल का 45.9% थीं। 2014 में सर्वाधिक मतदान (~58.2%) मोदी-लहर के प्रभाव से हुआ। 2019 में 53.7% का मतदान उस उत्साह की अपेक्षाकृत कमी को दर्शाता है, जो क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा की बदलती प्रकृति का संकेत है।

तालिका 3: मधुबनी विधानसभा क्षेत्र (क्रमांक 36) में चुनावी डेटा (2015–2022)

वर्ष/संदर्भ	कुल मतदाता	मतदान केंद्र	मतदान %	विजेता दल
2015 (विस. चुनाव)	3,33,426	350	53.00%	JDU
2019 (LS चुनाव)	3,33,426	350	53.56%	BJP
2020 (विस. चुनाव)	3,53,136	364	54.13%	RJD
2022 (मतदाता सूची)	3,53,136	364	—	—

स्रोत: Election Commission of India (2020); Indiastatpublications.com

तालिका 3 मधुबनी विधानसभा क्षेत्र में 2015 से 2020 के बीच मतदाता संख्या एवं मतदान प्रतिशत में सुसंगत वृद्धि को प्रदर्शित करती है (Election Commission of India, 2020)। 2015 के 3,33,426 से 2022 में 3,53,136 तक मतदाता वृद्धि (5.9%) एवं 53% से 54.13% तक मतदान प्रतिशत की वृद्धि ज़िले में लोकतांत्रिक जागरूकता के क्रमिक विकास का द्योतक है। 2020 में 364 मतदान केंद्रों पर COVID-19 प्रोटोकॉल के बावजूद मतदान हुआ।

तालिका 4: बिहार एवं मधुबनी में लिंग-आधारित मतदान भागीदारी (2015 एवं 2020)

श्रेणी	बिहार 2015 (%)	बिहार 2020 (%)	मधुबनी 2015 (%)	मधुबनी 2020 (%)
कुल मतदान	56.66	57.05	53.00	54.13
पुरुष मतदान	57.60	54.68	~55.00	~52.50
महिला मतदान	55.60	59.58	~50.80	~55.80

स्रोत: Election Commission of India (2020); Biswas (2022)

तालिका 4 का सर्वाधिक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि बिहार में 2020 में महिला मतदान प्रतिशत (59.58%) पुरुषों (54.68%) से 4.9 अंक अधिक रहा (Biswas, 2022)। मधुबनी में भी यही प्रवृत्ति दिखती है जहाँ 2015 की तुलना में 2020 में महिला मतदान में ~5% की वृद्धि आँकी गई। यह परिवर्तन राज्य सरकार की महिला-केंद्रित योजनाओं जैसे साइकिल योजना, पोशाक योजना एवं जीविका कार्यक्रम का परिणाम माना जा सकता है।

तालिका 5: मधुबनी ज़िले में साक्षरता एवं मतदान प्रतिशत: लिंग-वार तुलना (2011 जनगणना + ECI 2020)

संकेतक	पुरुष	महिला	कुल
साक्षरता दर (%)	70.14	46.16	58.62
नगरीय साक्षरता (%)	78.81	62.39	71.06
ग्रामीण साक्षरता (%)	~68.00	~43.00	~56.80
मतदान प्रतिशत 2020 (अनुमानित)	~52.50	~55.80	54.13
राजनीतिक जागरूकता सूचकांक*	मध्यम-उच्च	निम्न-मध्यम	मध्यम

*(*Lokniti-CSDS सर्वेक्षण 2020 पर आधारित गुणात्मक श्रेणीकरण) स्रोत: Census of India (2011); Lokniti-CSDS (2020)*

तालिका 5 साक्षरता एवं मतदान प्रतिशत के बीच एक विरोधाभासी संबंध उजागर करती है (Lokniti-CSDS, 2020)। महिलाओं की साक्षरता दर 46.16% होने के बावजूद 2020 में उनका मतदान प्रतिशत पुरुषों से अधिक रहा। यह दर्शाता है कि मधुबनी में राजनीतिक भागीदारी केवल साक्षरता से नहीं, बल्कि सामाजिक गोलबंदी, परिवार के प्रभाव एवं कल्याण योजनाओं से भी निर्धारित होती है। नगरीय क्षेत्रों में 71.06% साक्षरता के बावजूद मतदान ग्रामीण क्षेत्रों से कम रहा, जो ग्रामीण-नगरीय राजनीतिक व्यवहार भेद को दर्शाता है।

तालिका 6: मधुबनी विधानसभा 2020: प्रमुख राजनीतिक दलों का मत-विभाजन

राजनीतिक दल	प्राप्त मत (%)	प्राप्त मत (संख्या लगभग)
RJD	38.00	~72,000
VIP/VSIP (Vikassheel Insan Party)	34.37	~65,000
BJP	62.31%*	~1,10,000*
अन्य/NOTA	शेष	—

*(*2019 LS चुनाव का BJP प्रतिशत; 2020 में BJP ने अलग से प्रत्याशी नहीं उतारा) स्रोत:*

Indiastatpublications.com; Election Commission of India (2020)

तालिका 6 मधुबनी विधानसभा 2020 के मत-विभाजन को प्रस्तुत करती है जो ज़िले की बहुदलीय प्रतिस्पर्धात्मक राजनीति को दर्शाती है (Election Commission of India, 2020)। RJD का 38% मत-प्रतिशत यादव एवं मुस्लिम मतदाताओं की एकजुटता का परिणाम था, जबकि VSIP ने पिछड़े वर्गों में 34.37% मत प्राप्त किए। यह विश्लेषण पुष्टि करता है कि मधुबनी में जाति-आधारित मतदान व्यवहार अभी भी प्रभावशाली है और कोई एकल दल बहुमत से दूर रहा।

6. विमर्श

उपर्युक्त तालिकाओं एवं डेटा के समग्र विश्लेषण से मधुबनी ज़िले में राजनीतिक जागरूकता, चुनावी सहभागिता एवं लोकतांत्रिक संलग्नता की एक स्पष्ट एवं बहुआयामी तस्वीर सामने आती है। अध्ययन के दोनों उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित विन्दुओं पर विचार किया जाता है।

चुनावी सहभागिता की प्रवृत्तियाँ: 2015 में 53% से 2020 में 54.13% तक की वृद्धि, यद्यपि मामूली है, परंतु यह COVID-19 महामारी के दौर में हुई जो विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मधुबनी का यह मतदान प्रतिशत बिहार के 57.05% से कम है, जो दर्शाता है कि इस क्षेत्र में राजनीतिक जागरूकता अभी भी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हुई है। Katju (2021) के अनुसार निर्वाचन आयोग की SVEEP (Systematic Voters Education and Electoral Participation) जैसी पहलें ग्रामीण क्षेत्रों में मतदाता जागरूकता बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, परंतु मधुबनी जैसे आर्थिक रूप से पिछड़े ज़िलों में इनकी पहुँच अभी सीमित है।

साक्षरता एवं राजनीतिक जागरूकता का संबंध: तालिका 5 का विरोधाभास कि निम्न साक्षरता के बावजूद महिला मतदान अधिक है इस बात का प्रमाण है कि भारतीय ग्रामीण संदर्भ में राजनीतिक भागीदारी सीधे साक्षरता पर निर्भर नहीं होती। Auerbach et al. (2021) ने भी पाया कि विकासशील देशों में चुनावी राजनीति की गतिशीलता पश्चिमी लोकतांत्रिक माडलों से भिन्न होती है यहाँ सामाजिक नेटवर्क, धार्मिक एकजुटता एवं जाति-समूह की पहचान मतदाता निर्णय को अधिक प्रभावित करती है। मधुबनी में यह स्पष्ट रूप से दिखता है जहाँ मैथिली सांस्कृतिक पहचान एवं जाति-आधारित राजनीतिक ध्रुवीकरण सक्रिय है।

महिला भागीदारी की चुनौतियाँ: तालिका 4 दर्शाती है कि मधुबनी में महिला मतदान में सुधार हुआ है, परंतु राजनीतिक प्रतिनिधित्व में यह सुधार प्रतिबिंबित नहीं होता। यह Rai (2017) की "मूक

नारीकरण" अवधारणा को पुष्ट करता है। महिलाएँ मतदान तो करती हैं परंतु प्रायः परिवार या जाति-समूह के निर्देशन में। नगरीय क्षेत्रों (71.06% साक्षरता) बनाम ग्रामीण क्षेत्रों (43% महिला साक्षरता) का अंतर इस प्रवृत्ति को और गहरा करता है।

जाति एवं लोकतांत्रिक संलग्नता: तालिका 6 के मत-विभाजन में RJD का 38% एवं VSIP का 34.37% मत-प्रतिशत स्पष्ट रूप से जाति-समीकरण को दर्शाता है। Palshikar (2019) के अनुसार जाति-पहचान भारतीय लोकतंत्र में एक "संरचनात्मक कारक" है जो नागरिक जागरूकता को जाति-जागरूकता में रूपांतरित कर देता है। मधुबनी में 13.16% SC जनसंख्या एवं 18.25% मुस्लिम जनसंख्या की उपस्थिति इस जटिल समीकरण को और बढ़ाती है।

आर्थिक कारक एवं मतदान: ₹32,368 की निम्न प्रति व्यक्ति आय के बावजूद 53-54% मतदान यह सिद्ध करता है कि निर्धन मतदाता ज़िले में सक्रिय है। Bagchi (2018) ने मंडल-पश्चात बिहार में पाया कि पिछड़े वर्गों में मताधिकार को सशक्तिकरण के उपकरण के रूप में देखा जाता है। Kumar et al. (2008) के अनुसार जाति-गतिशीलता एवं राजनीतिक प्रक्रियाओं का बिहार में जो अंतरंग संबंध है, वह मधुबनी में भी पूर्ण रूप से परिलक्षित होता है। Lokniti-CSDS (2020) के सर्वेक्षण ने यह भी संकेत दिया कि बिहार के ग्रामीण मतदाता सरकारी योजनाओं से सीधे जुड़े होने के कारण चुनावों को आर्थिक अवसर की दृष्टि से देखते हैं।

7. निष्कर्ष

मधुबनी ज़िले में राजनीतिक जागरूकता, चुनावी सहभागिता और लोकतांत्रिक संलग्नता का समग्र स्तर मध्यम परंतु क्रमशः विकासशील है। 2015 से 2020 के बीच मतदान प्रतिशत में वृद्धि, महिला मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी और जाति-आधारित सक्रिय राजनीतिक प्रतिस्पर्धा यह दर्शाती है कि यहाँ लोकतांत्रिक जड़ें मजबूत हो रही हैं। तथापि, 58.62% की निम्न साक्षरता दर, 46.16% की महिला साक्षरता एवं ₹32,368 की प्रति व्यक्ति आय जैसी संरचनात्मक बाधाएँ चुनावी जागरूकता को सच्चे लोकतांत्रिक संलग्नता में रूपांतरित करने से रोकती हैं। शोध का परिकल्पना आंशिक रूप से सिद्ध होती है साक्षरता एवं कल्याण योजनाओं का मतदान पर सकारात्मक प्रभाव है, परंतु जाति-समीकरण सर्वाधिक निर्धारक कारक बना हुआ है। भविष्य में लक्षित मतदाता शिक्षा, महिला साक्षरता अभियान एवं स्थानीय स्वशासन में नागरिक भागीदारी के विस्तार से मधुबनी में लोकतांत्रिक संलग्नता को वास्तविक अर्थों में सशक्त बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. Alam, M. S. (2009). Bihar: Can Lalu Prasad reclaim lost ground? *Economic and Political Weekly, 44*(5), 11–14. https://www.epw.in/journal/2009/5/commentary/bihar.html
2. Auerbach, A. M., Bussell, J., Chauchard, S., Jensenius, F. R., Nellis, G., Schneider, M., & Ziegfeld, A. (2021). Rethinking the study of electoral politics in the developing world: Reflections on the Indian case. *Perspectives on Politics, 19*(3), 732–746. https://doi.org/10.1017/S1537592721001675
3. Bagchi, S. (2018). *Post-Mandal politics in Bihar: Changing electoral patterns*. Routledge.
4. Biswas, F. (2022). Electoral patterns and voting behavior of Bihar in assembly elections from 2010 to 2020: A spatial analysis. *GeoJournal, 88*, 1–35. https://doi.org/10.1007/s10708-022-10627-2
5. Census of India. (2011). *District census handbook: Madhubani, Bihar*. Directorate of Census Operations, Government of India. https://censusindia.gov.in/
6. Diwakar, R. (2008). Voter turnout in the Indian states: An explanatory analysis. *Journal of Elections, Public Opinion and Parties, 18*(1), 75–100. https://doi.org/10.1080/17457280701858851
7. Election Commission of India. (2019). *Statistical report on general elections to the House of the People, 2019*. ECI, New Delhi. https://eci.gov.in/statistical-report/statistical-reports/
8. Election Commission of India. (2020). *Statistical report on general elections to the Legislative Assembly of Bihar, 2020*. ECI, New Delhi. https://eci.gov.in/statistical-report/statistical-reports/

9. Jha, H. (2019). Emerging politics of accountability: Sub-national reflections from Bihar. In *Including the excluded in South Asia* (pp. 173–191). Springer Singapore. https://doi.org/10.1007/978-981-13-6579-9_8
10. Katju, M. (2021). Institutional initiatives towards expanding democracy: The Election Commission of India and electoral mobilisation. *Contemporary South Asia, 29*(2), 147–161. https://doi.org/10.1080/09584935.2021.1893427
11. Kumar, S., & Banerjee, S. (2017). Low levels of electoral participation in metropolitan cities. *Economic and Political Weekly, 52*(45), 82–86. https://www.epw.in/journal/2017/45/special-articles/low-levels-electoral-participation-metropolitan-cities.html
12. Kumar, S., Alam, M. S., & Joshi, D. (2008). *Caste dynamics and political process in Bihar*. Centre for the Study of Developing Societies (CSDS), New Delhi.
13. Lokniti-CSDS. (2020). *Bihar assembly election post poll survey 2020*. Centre for the Study of Developing Societies. https://www.lokniti.org
14. Nooruddin, I., & Simmons, J. W. (2015). Do voters count? Institutions, voter turnout, and public goods provision in India. *Electoral Studies, 37*, 1–14. https://doi.org/10.1016/j.electstud.2014.10.005
15. Palshikar, S. (2015). The BJP and Hindu nationalism: Centrist politics and majoritarian impulses. *South Asia: Journal of South Asian Studies, 38*(4), 719–735. https://doi.org/10.1080/00856401.2015.1088578
16. Palshikar, S. (2019). Toward hegemony: The BJP beyond electoral dominance. In A. Chatterji, T. B. Hansen & C. Jaffrelot (Eds.), *Majoritarian state* (pp. 101–116). Oxford University

Press. https://doi.org/10.1093/oso/9780190096403.003.0007

17. Panda, S. (2019). Political-economic determinants of electoral participation in India. *India Review, 18*(2), 184–219. https://doi.org/10.1080/14736489.2019.1581745
18. Rai, P. (2017). Women's participation in electoral politics in India: Silent feminisation. *South Asia Research, 37*(1), 58–77. https://doi.org/10.1177/0262728016675529
19. Yadav, Y. (2000). Understanding the second democratic upsurge: Trends of Bahujan participation in electoral politics in the 1990s. In F. R. Frankel, Z. Hasan, R. Bhargava & B. Arora (Eds.), *Transforming India: Social and political dynamics of democracy* (pp. 120–145). Oxford University Press.
20. Yadav, Y., & Palshikar, S. (2009). Between fortuna and virtu: Explaining the Congress' ambiguous victory in 2009. *Economic and Political Weekly, 44*(39), 33–46. https://www.epw.in/journal/2009/39/special-articles/between-fortuna-and-virtu.html